

प्रच्छिन्न s. u. 1. का mit प्र.

प्रच्छिद् (1. हिद् mit प्र) adj. P. 3, 2, 61, Sch. *abschneidend, zerschneidend* VS. 30, 16.

प्रच्छेद (von 1. हिद् mit प्र) m. *Abschnitt, Schnitzel* KĀT. 8, 8, 30.

प्रच्छेदन (wie eben) n. *das Zerstückeln* SHADV. Br. 4, 3.

प्रच्छेद्य partic. fut. pass. von 1. हिद् mit प्र; s. घ०.

प्रच्यव (von 1. च्यु mit प्र) m. 1) *Fortgang, das Weichen*: त्रिगुणास्वभावत्वात्प्रकर्तेर्न स्वभावप्रच्यवः Schol. zu KĀP. 1, 145. 160. — 2) *Fall*: न वा एतौ मनुष्याः प्रच्यवमर्हन्ति KĀTH. 27, 8.

प्रच्यवन (wie eben) n. 1) *das sich-fort-Begeben, Weichen*: दोष० SUÇR. 2, 15, 19. — 2) *das Kommen um* (abl.): राष्ट्रान् MBh. 4, 646.

प्रच्यावन (vom caus. von 1. च्यु mit प्र) n. 1) *Mittel der Entfernung, — Niederschlagung, — Minderung*: दोष० SUÇR. 1, 146, 15. — 2) *das Abbringen von* (abl.): स्वमतात् P. 8, 2, 94, Sch.

प्रच्यवुक (von 1. च्यु mit प्र) adj. *hinfällig*: ब्रह्मन्त्रे एव प्रच्यवुके, विष्प्रच्यवुका ÇĀNKH. Ba. 16, 4, 2, 1. 3, 8, 15, 4.

प्रच्युतव (von प्रच्युत; s. u. 1. च्यु mit प्र) n. *das Gewichen* MA-
DHJAM. 96.

प्रच्युति (wie eben) f. 1) *Fortgang, Weggang, das Weichen*: स्वभाव० das erste Mal ist स्वभावाप्रच्युतिम् zu lesen) ÇĀNKH. zu BRH. ÂR. UP. S. 255. आत्मभावस्य MADHJAM. 8. — 2) *das um-Etwas-Kommen, Verlustig-gehen*: नित्यं प्रच्युतिशङ्कया तणामपि स्वर्गे न मोदामहे ÇĀNTIÇ. 4, 20. — 3) *Hinfälligwerden*: घ० ÇĀT. Br. 13, 5, 4, 12. ÇĀNKH. Çr. 16, 22, 13, 22.

प्रक्ष् पृच्छति DHĀTUP. 28, 120. P. 6, 1, 16; अप्राप्तम् अप्राप्तिम्, अप्राप्ति-
त्, अप्राप् (ved.); पप्रच्छ; प्रद्यति (प्रद्यसि MBh. 4, 278 fehlerhaft für
स्प०), प्रष्टा P. 8, 2, 36, Sch. KĀR. 2 aus SIDDH. K. zu P. 7, 2, 10. med.
(in gebundener Rede) पृच्छते, पृच्छते (ved.), पृच्छासु NĀIGH. 3, 14; पृष्टा P.
1, 2, 8; प्रष्टुम् P. 8, 2, 36, Sch.; pass. पृच्छते, partic. पृष्टः Jmd (acc.) oder
nach Jmd (acc.) fragen, Jmd (acc.) um Etwas (acc.) fragen, erfragen, for-
schen nach; suchen; bittend angehen RV. 1, 161, 4. 164, 4. 2, 12, 5. 4, 3,
8, 5, 11. यज्ञो पृच्छादीनामः 8, 24, 30. अनेत्रवित्तेत्रविद् ह्यप्राट् 10, 32, 7.
79, 6. कथा ग्रामं न पृच्छसि *aufsuchen* 146, 1. AV. 10, 8, 10. 12, 4, 43. 7,
34, 2. 8, 9, 7. ÇĀT. Br. 1, 7, 4, 17. 10, 3, 4, 1. 11, 4, 4, 3. 9. 12, 8, 2, 3. 14, 6, 8,
1. तं वीपनिपदं पुरुषं पृच्छामि 9, 28. VS. PRĀT. 1, 28. सोमेन यत्प्रमाणो
नर्तुं पृच्छेन्न नतत्रम् *er frage nichts nach* ÂÇV. Çr. 2, 1. GRH. 4, 7. पृष्टा
स्वदितमित्येवम् M. 3, 251. 2, 110. fg. 11, 17. MBh. 3, 2120. 2690. HIT. 27,
22. 40, 16. वृक्षीति ब्राह्मणं पृच्छत् M. 8, 88. BHAG. 2, 7. SĀV. 3, 92. INDR.
1, 38. R. 1, 9, 44. 2, 90, 21. SUÇR. 1, 30, 6. RAGH. 3, 5. MEGH. 83. KATHĀS.
3, 46. 17, 95. 38, 52. 43, 403. PĀNĀT. 130, 4. ÇUK. 41, 19. BHATT. 7, 65.
15, 5. उत तमादेशमप्राह्यः (v. l. अप्रातः) KĀND. UP. 6, 1, 3 = VEDĀNTAS.
(Allah.) No. 120. पप्रच्छानामयं चापि तयोः MBh. 3, 2118. 2182. R. 1, 2,
28. 20, 13. Spr. 1103. तत्रेन हि ममाचक्ष्व पृच्छत्या देववृषिणीम् *fragend*
nach MBh. 3, 2692. यदि तावदस्य शिशोर्नामतो मातरं पृच्छामि so v. a.
nach dem Namen der Mutter fragen ÇĀK. 104, 22. ब्राह्मणं कुशलं पृच्छे-
त् M. 2, 127. 8, 87. MBh. 3, 2750. ततो वक्ष्यसि यज्ञो स प्रद्यति 1, 858.
2, 150. R. 1, 8, 13. R. GORR. 1, 21, 9. RAGH. 1, 45. 58. 14, 27. ÇĀK. 14, 10.
71, 5. MEGH. 99. VID. 130. KATHĀS. 27, 177. 28, 192. BHATT. 6, 3. 42. P. 1,
4, 31, Sch. VOP. 5, 6. सर्वान्यथावच्च द्वौकसश्च पप्रच्छरेणं कुरुक्षेत्रपुत्राः

sie erkundigten sich bei ihm nach ARĀ. 1, 8. med.: यं सूरिरर्थो पृच्छमानं
एति RV. 7, 1, 23. पृच्छे तदेनः 86, 3. 10, 22, 6. प्रोो पुत्सु प्रथमः पृच्छते गाः
9, 89, 3. गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः 97, 34, 35. सभामेति कितवः पृच्छ-
मानो ज्ञेयमीति *sich fragend* 10, 34, 6. 88, 14. इहेक्षु यद्वा समना पृच्छते
सेयमस्मै सुमतिः 4, 43, 4. ÇĀT. Br. 13, 4, 2, 17. पृच्छमान MBh. 12, 13941.
दमयन्तीमपृच्छत् 3, 2683. 12070. 13, 297. BHĀG. P. 3, 14, 12. 21, 56. कर्म-
सिद्धिमपृच्छत् MBh. 1, 1451. ते तमर्थमपृच्छत् देवान् M. 2, 152. MBh. 3,
2891. 13338. 14, 423. pass.: तथा तेन पृच्छमाना MBh. 3, 2392. अपृच्छत
KATHĀS. 9, 85. RĀGA-TAR. 4, 63 (wo अपृच्छत zu lesen ist). स तैः पृच्छन्त-
या M. 1, 4. 119. 2, 110. 8, 60. 76. 255. 261. ÇĀT. Br. 3, 5, 4, 17. MBh. 3,
2874. ÇĀK. 59. VID. 267. VET. 8, 18. 11, 17. स मया योगनन्दस्य राज्यावा-
र्त्तमपृच्छत KATHĀS. 3, 107. दात्रा पृष्टा कृविर्गुणान् M. 3, 236. 8, 54. KU-
MĀRAS. 6, 93. एष मा तस्मान्मा हिंसोददेः पृष्टः AV. 7, 54, 2. तथैवाष्टि ये
पृष्टा निधयो मया MĀRK. P. 69, 1. पृष्टाभिधायिन् *das Gefragte beantwor-*
tend VARĀH. BRH. S. 2, Anf. Das entferntere Object wird auch mit प्रति
verbunden: गिरिराजमिमं तावत्पृच्छामि नृपतिं प्रति MBh. 3, 2441. तत्रा-
सौ निजशापात् प्रति पृष्टा मया KATHĀS. 7, 32. mit अर्थे *wegen*: कं नु पृच्छा-
मि दुःखार्ता तदर्थे MBh. 3, 2428. mit अधिकृत्य *über*: दातापण्या पतित्र-
तमधिकृत्य पृष्टः ÇĀK. 101, 7. steht auch im loc.: यः प्रश्नं वितथं ब्रूयात्पृ-
ष्टः सन्धर्मनिश्चये M. 8, 94. — शिवाय विश्वरूपाय यन्मो पृच्छयुधिष्ठिरः
was er mich in Betreff Çiva's gefragt hat MBh. 13, 606.

— caus. प्रच्छयति WEST. प्रच्छयति MBh. 3, 1226 Druckfehler für
प्रयच्छति.

— desid. पिपृच्छयति P. 1, 2, 8. 7, 2, 75 (beim Schol. falschlich पिप्र०).
VOP. 19, 6. 7.

— intens. परिपृच्छते PAT. zu P. 7, 4, 90. Sch. zu P. 6, 1, 16.

— अति *darüber hinaus* —, *weiter fragen*: यद्वा प्राणमत्पप्रद्यः TBh.
3, 10, 9, 5. ÇĀT. Br. 11, 6, 2, 11. 14, 6, 1.

— अनु *fragen, befragen, fragen nach, um*: सागरायानुपृच्छते MBh. 12,
10613. BHĀG. P. 6, 8, 3. अन्वपृच्छतां त्रयं विकुरूपे कथम् MBh. 13, 1513.
R. GORR. 2, 37, 27. BHĀG. P. 1, 19, 31. 3, 8, 2. तामिन्द्रो ऽन्वपृच्छत् MBh.
13, 559. मरणं मानुप्राप्तिः KĀTHOP. 1, 25. कुशलं चान्वपृच्छत् MBh. 3, 946.
13, 2007. BHĀG. P. 2, 6, 32. 8, 29. प्रश्नं वाचनसोमी यस्मात्प्रमनुपृच्छसि
MBh. 14, 640. यस्या भयाद्रामं (nach Rāma) नानुपृच्छसि सारथिम् R. 2, 57.
29. कुशलं त्वानुपृच्छति R. GORR. 2, 81, 11. BHĀG. P. 1, 16, 26. 2, 9, 42. अ-
नुपृष्ट *nach dem man sich erkundigt* 1, 13, 22. n. *wiederholte Frage* NIK.
1, 4, 5. — Vgl. अनुप्रश्न.

— अन्वयु *dass*. MBh. 13, 2169. तं सर्वे ऽन्वयुपृच्छन् 12, 1933.

— समनु *dass.*: विदितं वेदितव्यं ते कस्मात्समनुपृच्छसि MBh. 3, 12516.
कस्मादितं समनुपृच्छसि 2, 2142. 14, 753.

— अस्मि *dass*. BHATT. 3, 29. पुरोहितमभिप्रष्टुम् MBh. 13, 3733. आ स्मा-
भिपृच्छे ऽयं पतिं प्रज्ञानाम् BHĀG. P. 3, 24, 34. अस्त्यस्माकमभिप्रेतं भवतं
कंचिदर्थमभिप्रष्टुम् (so ist zu verbinden) MBh. 3, 13339. अभिपृष्ट *wonach*
man gefragt hat BHĀG. P. 2, 2, 32.

— आ *med.* P. 1, 3, 21, VĀRT. 6. VOP. 23, 1. 1) *sich bei Jmd. (acc.)*
verabschieden, Lebewohl sagen: आपृच्छे त्वाम् MBh. 1, 3270. 2, 58. R. 2,
34, 22. 30, 2. 5, 36, 76. आपृच्छस्व 2, 21, 28. MEGH. 12. आप्रष्ट KATHĀS. 29,
62. आपृच्छे BHATT. 14, 63. आपृच्छ R. 1, 2, 3. 9, 40. 74, 1. 2, 34, 7. RAGH.